RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(6):128-139
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i06.022
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

दुर्ग–भिलाई नगरों के कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना : एक भौगोलिक अध्ययन

*शिवेन्द्र बहादुर

शोध छात्र, भूगोल अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग–भिलाई नगरों के कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना का अध्ययन करना है। यह अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक आँकडों पर आधारित है। जुड़वा नगरों में कार्यशील महिला परिवारों के जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना की जानकारी प्राप्त करने हेतु कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए उद्देश्य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों से सम्बंधित जानकारियाँ साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों से कुल 1202 कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों से जानकारी प्राप्त की गई। अध्ययन की विषय–वस्तु के आधार पर चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना का पृथक–पृथक परिकलन किया गया। चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी संरचना के तहत जनसंख्या, आयु एवं लिंग संरचना, लिंगानुपात एवं सामाजिक संरचना के तहत परिवार का प्रकार, परिवार का आकार, जाति संरचना, वैवाहिक संरचना, साक्षरता स्तर एवं शैक्षणिक स्थिति को विश्लेषित किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण में कार्यशील महिला परिवारों में निर्भरता अनुपात (DR) का विश्लेषण किया गया है।

Keywords: *दुर्ग–भिलाई नगर, जनांकिकी संरचना, सामाजिक संरचना, निर्भरता अनुपात।*

Article Publication

Published Online: 15-Jun-2021

***Author's Correspondence**

शिवेन्द्र बहादुर

शोध छात्र, भूगोल अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

shivendrakorar@gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में औद्योगीकरण एवं नगरीयकरण का विशेष योगदान होता है, क्योंकि औद्योगीकरण व नगरीयकरण के फलस्वरूप क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक दशाओं में गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य के जुड़वा नगर कहे जाने वाले दुर्ग–भिलाई नगर के सामाजिक–आर्थिक विकास में औद्योगीकरण व नगरीयकरण के प्रभाव का सुन्दर उदाहरण मिलता है। दोनों नगरों में औद्योगीकरण व नगरीयकरण के फलस्वरूप जनसंख्या में व्यावसायिक विभेदीकरण एवं व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन के कारण सामाजिक–आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है, जिससे कार्यशील महिलाओं तथा उनके परिवारों की स्थिति भी मजबूत एवं सुदृढ़ हुई है। वास्तव में कार्यशील महिलाओं की कार्यिक संरचना पर उनके परिवारों की सामाजिक–आर्थिक दशा का प्रभाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है तथा यह नगर के सामाजिक–आर्थिक विकास को भी निर्धारित करती है। अस्तु प्रस्तुत अध्ययन में चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य दुर्ग–भिलाई नगरों के कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना का अध्ययन करना है। इस हेतु शोध पत्र को दो भागों में, प्रथम भाग में चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी संरचना एवं द्वितीय भाग में सामाजिक संरचना का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र–

दुर्ग नगर – वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ में तीव्र नगरीकरण के फलस्वरूप दुर्ग नगर छत्तीसगढ़ का प्रमुख व्यापारिक, वाणिज्यिक एवं औद्योगिक नगर बन गया है। दुर्ग नगर के विकास में भिलाई औद्योगिक नगर की निकटता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए इन्हें छत्तीसगढ़ का जुड़वा नगर कहा जाता है। दुर्ग नगर, शिवनाथ नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। दुर्ग नगर जिले का प्रशासनिक केन्द्र एवं जिला मुख्यालय है तथा यह राज्य की राजधानी रायपुर से 45 किलोमीटर एवं भिलाई नगर से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस नगर का विस्तार 21°9′3′′ से 21°14′1′′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°14′43′′ से 81°19′13′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है **(मानचित्र 1.1)**। दुर्ग नगर की समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 300 मीटर है। इस नगर से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग–58 गुजरती है। वर्तमान में दुर्ग नगर 60 वार्डो में विभक्त है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर की कुल जनसंख्या 2,68,806 व्यक्ति है जो नगर के 54.11 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर का जनसंख्या घनत्व 4968 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। दुर्ग नगर में जनसंख्या वृद्धि दर 1951–61 के दशक में सर्वाधिक 132.67 प्रतिशत रहा, जो भिलाई नगर में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना का प्रतिफल था। सबसे कम वृद्धि वर्तमान दशक (2001–2011) में 15.61 प्रतिशत प्राप्त हुई।

भिलाई नगर – भिलाई नगर छत्तीसगढ़ का सर्वोपरिय औद्योगिक नगर हैं। इस नगर का विस्तार 21°7′53′′ से 21°15′33′′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°19′13′′ से 81°26′3′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है **(मानचित्र 1.1)**। भिलाई नगर का विकास भिलाई ग्राम से हुआ जो नगर के उत्तरी भाग में स्थित हैं। वर्ष 1956 में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के पूर्व तक भिलाई एक छोटे से ग्राम के रूप में था। भिलाई नगर के औद्योगिक विकास में नंदिनी चूना पत्थर क्षेत्र एवं दल्ली राजहरा के लौह खदानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस नगर से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग–58 गुजरती है। इसकी समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 294 मी. है। भिलाई नगर रायपुर से 30 किमी. एवं दुर्ग से 12 किमी. की दूरी पर स्थित है।

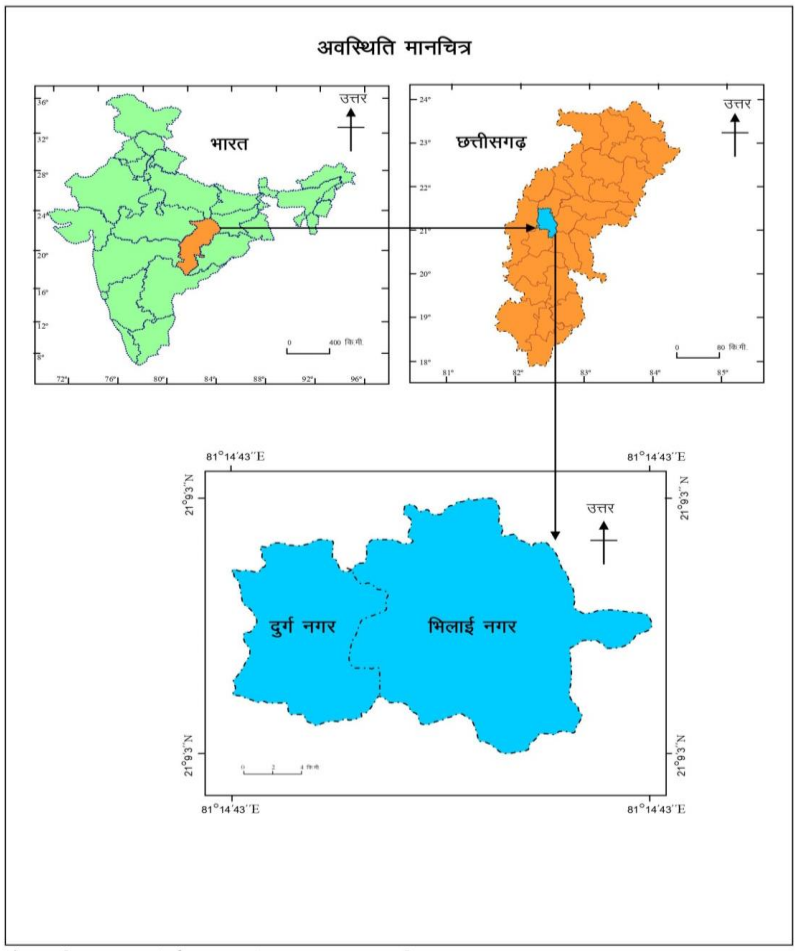

स्रोतः छत्तीसगढ़ राज्य संदर्भ एटलस एवं संचालनालय,नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर, छत्तीसगढ़

मानचित्र 1.1

वर्तमान में भिलाई नगर 70 वार्डो में विभक्त है। नगर का कुल क्षेत्रफल 142.32 वर्ग कि.मी. है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की कुल जनसंख्या 6,27,734 है। 2011 की जनगणना के अनुसार भिलाई नगर का जनसंख्या घनत्व 4411 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। भिलाई नगर में जनसंख्या वृद्धि दर 1961–71 के दशक में सर्वाधिक 102.5 प्रतिशत रही, जो लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के बाद भिलाई नगर में सर्वाधिक जनसंख्या आप्रवास का प्रतिफल रहा। वर्ष 2001–11 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 15.61 प्रतिशत प्राप्त हुई।

आँकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र – प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। इनमें नगरीय कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना संबंधी आँकड़ें प्रमुख हैं, तथापि नगर से संबंधित भौगोलिक एवं सांस्कृतिक जानकारी द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आँकड़ें – दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों के अध्ययन संबंधी विविध जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। जिसमें कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक दशा से संबंधित प्रश्न रखे गए। दुर्ग–भिलाई नगरों में कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों के विस्तृत अध्ययन हेतु कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए उद्देश्य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्यशील महिलाओं एवं उनके परिवारों सें सम्बंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। कार्यशील महिलाओं के कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए संबंधित जानकारी उनके कार्यस्थल यथा– शासकीय एवं अशासकीय कार्यालय, शिक्षण संस्थान, अस्पताल, दुकानों, निर्माण स्थलों, गंदी बस्तियों में जा कर प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों से 1202 कार्यशील महिलाओं का चयन किया गया एवं उनके परिवारों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई।

द्वितीयक आँकड़ें– शोध में दुर्ग–भिलाई नगर के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के विश्लेषण हेतु द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया। दोनों नगरों के जनसंख्या संबंधी आँकड़ें भारतीय जनगणना पुस्तिका 2011 से प्राप्त किया गया। दोनों नगरों के मानचित्र संचालनालय, नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर (छ.ग.) से प्राप्त किया गया।

विधितंत्र– साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों के प्रक्रियान्वयन के लिए सर्वप्रथम अनुसूची में संपादन तथा संकेतीकरण किया गया तथा प्राप्त सूचनाओं को कम्प्यूटर में प्रविष्ट कर वर्गीकरण एवं सारणीयन का कार्य सम्पन्न किया गया। अध्ययन की विषय–वस्तु के आधार पर चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना का पृथक–पृथक परिकलन किया गया। चयनित कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी संरचना के तहत जनसंख्या, आयु एवं लिंग संरचना, लिंगानुपात तथा सामाजिक संरचना के तहत परिवार का प्रकार, परिवार का आकार, जाति संरचना, वैवाहिक संरचना, साक्षरता स्तर एवं शैक्षणिक स्थिति को विश्लेषित किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण में कार्यशील महिला परिवारों में निर्भरता अनुपात (DR) का विश्लेषण किया गया है।

(अ) कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकीय संरचना

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक सम्बन्धों के निर्धारण में आयु एवं लिंग संरचना की भूमिका विशेष महत्व रखती है। जनांकिकी संरचना के विश्लेषण में आयु व लिंग का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इन दोनों कारकों के कारण सामाजिक–आर्थिक दशाएँ प्रभावित होती हैं (क्लार्क, 1972)। किसी भी समुदाय में लिंग संतुलन सामाजिक अथवा आर्थिक सम्बन्धों पर गंभीर प्रभाव डालती है। इसी प्रकार लिंगानुपात क्षेत्रीय स्थल रूप के विश्लेषण के साथ जनसांख्यिकीय तत्वों को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इसके विपरीत आयु संरचना केवल सामाजिक सम्बन्धों को ही नहीं अपितु जनसंख्या नियोजनों विशेषकर सामुदायिक संस्थाओं के नियोजन, सेवाएँ एवं मानव शक्ति पूर्ति को भी प्रभावित करती है। इस प्रकार मर्त्यता, उत्पादकता तथा आर्थिक अनुपात के निर्धारण में भी आयु संगठन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में चयनित कार्यशील महिलाओं की कार्यिक दशा एवं जीवन की गुणवत्ता के निर्धारण में परिवार की जनांकिकीय एवं सामाजिक संरचना का प्रभाव विशेष महत्व रखता है। दोनों जुड़वा नगरों में कुल 1202 परिवारों का व्यक्तिगत सर्वेक्षण किया गया है, जिसकी कुल जनसंख्या में पुरूषों का प्रतिशत (46.21%) महिलाओं की तुलना में (53.79%) अपेक्षाकृत कम प्रदर्शित हुआ। भिलाई नगर में जहाँ पुरूषों का प्रतिशत (46.97%) दुर्ग नगर (45.39%) से अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर के चयनित परिवारों में महिलाओं का प्रतिशत (54.61%) अपेक्षाकृत अधिक रहा **(सारणी क्र. 1.1 आरेख 1.1)**।

सारणी क्र. 1.1

दुर्ग – भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिला पारिवारों में जनसंख्या का विवरण, 2018

क्र.	नगर	कुल परिवार	कुल जनसंख्या	पुरूष		महिला	
				जनसंख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
1.	भिलाई	614	2280	1071	46.97	1209	53.03
2.	दुर्ग	588	2104	955	45.39	1149	54.61
कुल		**1202**	**4384**	**2026**	**46.21**	**2358**	**53.79**

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018

उल्लेखनीय है कि दुर्ग नगर में निर्माण कार्य एवं सहायक उद्योगों के विकास के कारण ग्रामीण क्षेत्र से व्यक्तियों का परिवार सहित प्रवास अधिक हुआ, वहीं भिलाई नगर एक नियोजित औद्योगिक नगर है, जिसके कारण पुरूषों द्वारा प्रवास अधिक हुआ।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिला परिवारों में जनसंख्या का विवरण, 2018

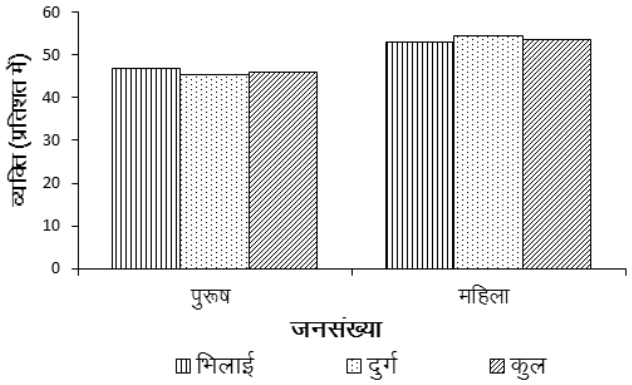

आरेख 1.1

आयु एवं लिंग संरचना

किसी भी परिवार के सदस्यों की क्रियाशीलता आयु संगठन से प्रभावित होती है। 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के व्यक्ति उत्पादक वर्ग अथवा क्रियाशील वर्ग में समाहित होते हैं। आयु संरचना किसी भी क्षेत्र के जनांकिकी संरचना के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है (मट्रास, 1977)। परिवार की आयु संरचना परिवार की क्रियाशीलता, उत्पादकता एवं उपभोग के सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार महिलाओं की क्रियाशीलता से परिवारों की आयु संरचना में न केवल परिवार के उत्पादक एवं अनुत्पादक वर्ग के सहसम्बन्ध को प्रभावित करते हैं अपितु महिलाओं की क्रियाशीलता के उत्प्रेरक तत्वों को भी व्यक्त करने के माध्यम होते हैं। आयु संरचना का विश्लेषण भविष्य के योजनाओं के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (मिशेल, 1968)। किसी जनसंख्या के आयु संगठन में तीन प्रमुख कारक–जन्मता, मर्त्यता तथा प्रवास है। ये तीनों कारक एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं तथा इनमें से किसी एक में परिवर्तन बांकी दोनों को भी प्रभावित करता है।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आयु संरचना में पर्याप्त अन्तर दृष्टव्य हुआ। जुड़वा नगरों के चयनित परिवारों में 0–6 आयु वर्ग का प्रतिशत 6.8 है, जबकि वृद्ध आयु वर्ग का प्रतिशत 6.41 है। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर में जहाँ 0–6 आयु वर्ग का प्रतिशत (6.99%) अधिक रहा, वहीं वृद्ध आयु वर्ग का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (7.02%) में प्रदर्शित हुआ। इसके विपरीत विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों का सर्वाधिक प्रतिशत 15–29 आयु वर्ग (29.68%) में प्राप्त हुआ। आयु में वृद्धि के साथ–साथ प्रतिशत में ह्रासात्मक प्रवृत्ति दृष्टव्य हुई। तुलनात्मक दृष्टि से 7–14 आयु वर्ग (8.60%), 30–44 आयु वर्ग (27.37%) एवं 45–59 आयु वर्ग में जहाँ भिलाई नगर में व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक प्रदर्शित हुआ, वहीं दुर्ग नगर में 15–29 आयु वर्ग

में (30.89%) में व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ, तथापि दोनों जुड़वा नगरों के विभिन्न आयु वर्गों की संरचना में स्थानिक विभेद अपेक्षाकृत कम रहा।

चयनित परिवारों में युवा एवं प्रौढ़ वर्ग (15–59 आयु वर्ग) का प्रतिशत 78.42 है। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर के चयनित परिवारों में युवा एवं प्रौढ़ आयु वर्ग का प्रतिशत (79.18%) अपेक्षाकृत अधिक रहा। इसी प्रकार पुरूष (75.82%) एवं महिला (81.99%) जनसंख्या में युवा एवं प्रौढ़ आयु वर्ग का सर्वाधिक प्रतिशत दुर्ग नगर में प्रदर्शित हुआ, जो ग्रामीण व्यक्तियों के परिवार सहीत प्रवास का प्रतिफल है। इस प्रकार दुर्ग–भिलाई नगर के युवा एवं प्रौढ़ आयु वर्ग में व्यक्तियों के प्रतिशत में स्थानिक विभेद अपेक्षाकृत कम रहा।

उल्लेखनीय है कि शिशु एवं वृद्ध आयु वर्ग जनसंख्या के जहाँ अनुत्पादक वर्ग में सम्मिलित हैं, वहीं 15–59 आयु वर्ग परिवार के क्रियात्मक वर्ग को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार परिवार के अनुत्पादक वर्ग क्रियाशील वर्ग पर आश्रित होते हैं। परिवार में आश्रित अनुपात की अधिकता जहाँ परिवार की निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सूचक है, वहीं क्रियाशील वर्ग की अधिकता परिवार की उन्नत एवं समृद्ध आर्थिक स्थिति को प्रतिबिम्बित करती है।

लिंगानुपात

किसी जनसंख्या के संख्यात्मक लिंग संगठन मापन को लिंगानुपात कहते हैं। भारत में लिंगानुपात का आँकलन प्रति हजार पुरूष में महिलाओं की संख्या के आधार पर किया जाता है। फ्रेंकलिन (1956) के अनुसार–लिंग अनुपात किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक सूचक है तथा प्रादेशिक विश्लेषण के लिए अत्यंत लाभदायक यंत्र है। ट्रिवार्था (1953) के अनुसार– किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए दोनों लिंगों का अनुपात आधारभूत है, क्योंकि यह न केवल स्थलरूप का एक महत्वपूर्ण लक्षण है, अपितु यह अन्य जनसांख्यिकीय तत्वों को भी महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। लिंगानुपात में पाई जाने वाली विभिन्नता सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में बाधक बनती है। फलतः लिंगानुपात को क्षेत्रीय विकास का सूचक भी माना जाता है (यादव, 2006)। नगरीय क्षेत्रों में प्रवास की लिंग चयनपरकता नगरीय लिंग अनुपात को परिवर्तित करने में विशेष महत्व रखती है। दोनों नगरों के कुल चयनित परिवारों में औसत लिंगानुपात 1163 महिला/हजार पुरुष प्राप्त हुआ, जो वर्ष 2011 की छत्तीसगढ़ के नगरीय लिंगानुपात (956 महिला/हजार पुरुष) की तुलना में अधिक है। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर (1129 महिला/हजार पुरुष) की तुलना में दुर्ग नगर में (1203 महिला/हजार पुरुष) में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अधिक रहा।

सारणी क्र. 1.2

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिला परिवारों के सदस्यों का आयुवर्गानुसार लिंगानुपात, 2018

क्र.	आयु वर्ग	भिलाई नगर की जनसंख्या			दुर्ग नगर की जनसंख्या			कुल जनसंख्या		
		कुल महिला	कुल पुरूष	महिला/ प्रति हजार पुरूष	कुल महिला	कुल पुरूष	महिला/प्रति हजार पुरूष	कुल महिला	कुल पुरूष	महिला/प्रति हजार पुरूष
1.	0–6	63	89	708	67	80	838	130	169	769
2.	7–14	96	100	960	90	80	1125	186	180	1033
3.	15–29	375	276	1359	387	263	1471	762	539	1414
4.	30–44	330	294	1123	313	260	1204	643	554	1161
5.	45–59	262	235	1115	242	201	1204	504	436	1156
6.	60 से अधिक	83	77	1078	50	71	704	133	148	1156
औसत		**1209**	**1149**	**1129**	**1149**	**955**	**1203**	**2358**	**2026**	**1164**

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018

सामान्यतः लिंगानुपात में शिशु लिंगानुपात (0–6 आयु वर्ग) अधिक संवेदनशील होता है। शिशु जन्म में बालिका की उपेक्षा स्त्रियों की सामान्य जीवन संभावना के गंभीर सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिणामों का द्योतक होता है। इस दृष्टि से दोनों जुड़वा नगरों में शिशु लिंगानुपात 769 शिशु बालिका/हजार शिशु बालक प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर (708 शिशु

बालिका/ हजार शिशु बालक) की तुलना में दुर्ग नगर (838 शिशु बालिका/हजार शिशु बालक) में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अधिक रहा।

चयनित कार्यशील महिला परिवारों के विभिन्न आयु वर्गों में लिंगानुपात में पर्याप्त भिन्नता दृष्टव्य हुई। शिशु वर्ग (769 शिशु बालिका/हजार शिशु बालक) एवं वृद्ध आयु वर्ग (899 महिला/हजार पुरूष) में दुर्ग– भिलाई जुड़वा नगरों में संयुक्त लिंगानुपात जहाँ कम प्रदर्शित हुआ, वहीं 15 से 29 आयु वर्ग में लिंगानुपात सर्वाधिक (1414 महिला/हजार पुरूष) प्राप्त हुआ। इस प्रकार 7 वर्ष से 59 आयु वर्ग में लिंगानुपात क्रमशः अधिक रहा। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर में 0–6 आयु वर्ग में लिंगानुपात 708 महिला/हजार पुरूष एवं 7–14 आयु वर्ग में जहाँ लिंगानुपात 960 महिला/हजार पुरूष रहा, वहीं दुर्ग नगर में शिशु एवं वृद्ध आयु वर्ग का लिंगानुपात कम प्राप्त हुआ, तथापि दोनों नगरों में 15 से 29 आयु वर्ग में लिंगानुपात सर्वाधिक दृष्टव्य हुआ **(सारणी क्र. 1.2, आरेख 1.2)**।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिला परिवारों के सदस्यों का आयु वर्गानुसार लिंगानुपात, 2018

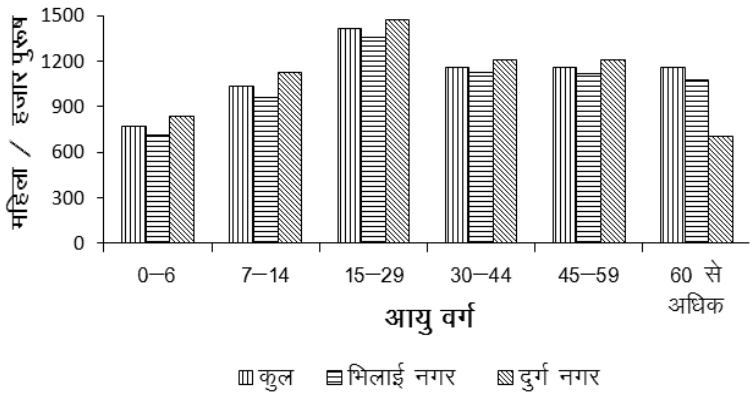

आरेख 1.2

सामान्यतः ग्रामीण नगरीय प्रवास में लिंग चयनपरकता के कारण स्त्रियों की जहाँ कमी होती है, वहीं औद्योगिक नगरीय केन्द्रों में द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाओं की उपलब्धता के कारण श्रमिक वर्गों द्वारा परिवार सहित लघु दूरी प्रवास अधिक होता है, तथापि चयनित परिवारों के शिशु वर्ग (0–6 आयु वर्ग) में बालक शिशु की तुलना में बालिका शिशु का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा। इसी प्रकार 7–14 आयु वर्ग में भी बालक शिशु का प्रतिशत जहाँ भिलाई नगर में अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर में बालिका शिशु का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ, जो दुर्ग नगर में ग्रामीण व्यक्तियों के परिवार सहित प्रवास का प्रतिफल है।

निर्भरता अनुपात

निर्भरता अनुपात का प्रारूप जन्मता प्रारूप से सम्बंधित होता है। निर्भरता अनुपात बच्चों एवं वृद्धों की संख्या को युवा वर्ग की संख्या से विभाजित कर प्रतिशत की मात्रा में ज्ञात किया जाता है। निर्भरता अनुपात की अधिकता जहाँ श्रमशक्ति की कमी को प्रदर्शित करती है, वहीं निर्भरता अनुपात की कमी श्रमशक्ति की अधिकता की परिचायक है। निर्भरता अनुपात मुख्यतः जनसंख्या के आयु संगठन से प्रभावित होता है। निर्भरता अनुपात ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है।

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{0–14 आयु वर्ग के व्यक्ति तथा 60 से अधिक आयु वर्ग के व्यक्तियों की संख्या}}{\text{15 से 59 आयु वर्ग के व्यक्ति की संख्या}} \times 100$$

दोनों जुड़वा नगरों के कुल चयनित परिवारों में कुल निर्भरता अनुपात 27.51 प्रतिशत प्राप्त हुआ। महिलाओं (23.52%) की तुलना में पुरूषों (32.50%) में निर्भरता अनुपात अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर में कुल निर्भरता अनुपात 28.67 प्रतिशत प्राप्त हुआ, जिसमें पुरूषों की तुलना में (33.04%) महिलाओं (25.03%) में निर्भरता अनुपात अपेक्षाकृत अधिक

रहा। उल्लेखनीय है कि भिलाई नगर औद्योगिक नगर होने के कारण यहाँ पुरूषों की उच्च शैक्षणिक स्तर में संलग्नता अधिक है, जिसके कारण भिलाई नगर के पुरूष आर्थिक कार्य में विलम्ब से संलग्न होते हैं। दुर्ग नगर में ग्रामीण प्रवास अधिक होने के कारण निम्न आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर के परिवारों की अधिकता है, जिसके कारण परिवार के महिला एवं पुरूष आर्थिक कार्यों में शीघ्र संलग्न हो जाते हैं, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार संभव हो सके। निर्भरता अनुपात में शिशु एवं वृद्ध वर्ग की भूमिका विशेष महत्व रखती है। इस दृष्टि से दोनों जुड़वा नगरों में शिशु आश्रित अनुपात (19.34%) से वृद्ध आश्रित अनुपात (8.17%) दो गुना अधिक प्रदर्शित हुई।

तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई एवं दुर्ग नगरों के शिशु आश्रित अनुपात में जहाँ विभेद कम रहा, वहीं वृद्ध आश्रित अनुपात में विभेद अधिक प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शिशु बालक आश्रित अनुपात (22.83%) शिशु बालिका आश्रित अनुपात (16.55%) से एवं पुरूष वृद्ध आश्रित अनुपात (9.68%) महिला वृद्ध आश्रित अनुपात (6.97%) से अधिक प्राप्त हुआ। स्पष्ट है कि महिलाओं की तुलना में पुरूषों में आश्रित अनुपात की अधिकता उनके उच्च शैक्षणिक स्तर में अध्ययनरत होने का प्रतिफल है, तथापि दुर्ग नगर की तुलना में भिलाई नगर में शिशु आश्रित अनुपात में जहाँ शिशु निर्भरता अनुपात अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर में वृद्ध पुरूष निर्भरता अनुपात (9.81%) अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। इसके विपरीत शिशु बालिका निर्भरता अनुपात में जहाँ स्थानिक विभेद नगण्य रहा, वहीं भिलाई नगर में वृद्ध महिला आश्रित दर (8.58%) अपेक्षाकृत अधिक प्रदर्शित हुआ।

(ब) कार्यशील महिला परिवारों की सामाजिक संरचना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसके तहत वह अपने आसपास सामाजिक सम्बन्धों का, वातावरण के आधार पर सुव्यवस्थित संरचना विकसित करता है, जिसे सामाजिक संरचना कहते हैं। जनसंख्या की सामाजिक संरचना किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास का सूचक है। महिलाओं की क्रियाशीलता में पारिवारिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार की सामाजिक संरचना महिलाओं की क्रियाशीलता एवं व्यावसायिक संरचना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। सामाजिक संरचना के अंतर्गत जनसंख्या के परिवार का प्रकार एवं आकार, जातीय संरचना, वैवाहिक संरचना, साक्षरता स्तर एवं धार्मिक संरचना निहित होते हैं। अस्तु, कार्यशील महिला परिवारों की सामाजिक संरचना का विश्लेषण करना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है।

परिवार का प्रकार

परिवार जनसंख्या के सामाजिक–आर्थिक जीवन की आधारशिला हैं, जिसमें व्यक्ति का आत्मसंरक्षण, वंशवर्धन तथा निजी जीवन की निरंतरता निहित होती है। परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है। सामान्यतया परिवार दो प्रकार के होते हैं– एकल एवं संयुक्त। एकल परिवार जिसे नाभिकीय परिवार के नाम से भी जाना जाता है, एक छोटा परिवार होता है, जिसमें पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे एक साथ रहते हैं जबकि संयुक्त परिवार में परिवार का दायित्व मुखिया पर होता है। नगरीय एवं शहरी जीवन की जटिलताओं ने केन्द्रीय परिवार की स्थापना की ओर महत्वपूर्ण योगदान दिया है (कपाड़िया, 1966)। नगरीय प्रवासों में एकल परिवारों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है। रोजगार की तलाश में व्यक्ति अपने मूल क्षेत्र से एकल परिवार के साथ प्रवासित होते हैं, तथापि लघु दूरी के प्रवास में ग्रामीण व्यक्ति परिवार सहीत प्रवासित होते हैं। इस दृष्टि से दुर्ग–भिलाई संयुक्त नगरों में एकल परिवारों की संख्या का प्रतिशत (77.04%) संयुक्त परिवार (22.96%) से तीन गुना अधिक रहा, तथापि एकल परिवारों का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (77.20%) में एवं संयुक्त परिवार का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (23.13%) में प्राप्त हुआ **(आरेख 1.3)**। इन दोनों जुड़वा नगरों में परिवार के प्रकारों में तीन गुना से अधिक अन्तर दृष्टव्य हुआ, जो परिवार की जनांकिकी, सामाजिक एवं आर्थिक संरचना के विश्लेषण में विशेष महत्व रखते हैं। उल्लेखनीय है कि संयुक्त परिवार वृहद सामाजिक व्यवस्था की संगठक इकाई है, जिससे परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर सुदृढ़ एवं समृद्ध होता है।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं के परिवार

का प्रकार, 2018

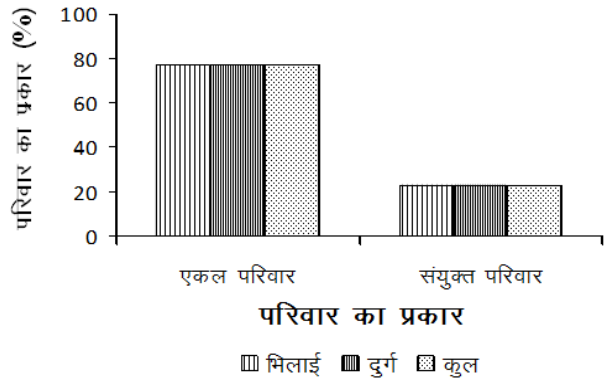

आरेख 1.3

परिवार का आकार

परिवार के आकार का सम्बन्ध परिवार के प्रकार से होता है। एकल परिवार जहाँ लघु परिवार को प्रतिबिंबित करता है, वहीं संयुक्त परिवार वृहद परिवार के सूचक होते हैं। निम्न आर्थिक स्थिति, परिवार के आकार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसका प्रभाव न केवल व्यक्तियों की क्रियाशीलता पर पड़ता है, अपितु परिवार की जीवन की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। एकल परिवार स्वतंत्र एवं आधुनिक विचारधारा के होते हैं वहीं वृहद परिवार परम्परावादी विचारधारा के होते हैं, जहाँ सदस्यों की संख्या अधिक होती है, जिससे आश्रित व्यक्ति की संख्या भी अधिक होती है। एकल परिवार में सदस्य संख्या कम होने के कारण उनकी सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी होती है तथा आर्थिक स्तर भी समृद्ध होता है। अस्तु केवल परिवार में ही मनुष्यों को सामाजिक प्रवृत्तियों को विकसित करने का आधार प्राप्त होता है (कपाड़िया, 1958)।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं के परिवार

का आकार, 2018

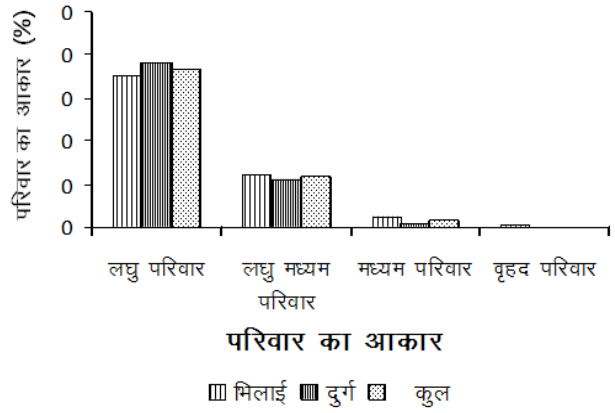

आरेख 1.4

इस दृष्टि से दुर्ग–भिलाई संयुक्त नगरों में लघु परिवार का प्रतिशत (73.13%) अपेक्षाकृत अधिक रहा। परिवार के आकार में वृद्धि के साथ–साथ प्रतिशत में निरन्तर कमी की प्रवृत्ति दृष्टव्य हुई। इस प्रकार लघु एवं वृहद परिवारों के मध्य सबसे अधिक विभेद

दृष्टव्य हुआ, जबकि लघु एवं लघु–मध्यम परिवार के मध्य तीन गुना एवं लघु–मध्यम एवं मध्यम परिवार के मध्य आठ गुना का अन्तर दृष्टव्य हुआ। मध्यम एवं वृहद परिवारों के प्रतिशत में तीन गुने का अन्तर दृष्टव्य हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर में जहाँ लघु परिवार (76.06%) अधिक रहे तथा वृहद परिवार की नगण्यता रही, वहीं दुर्ग नगर में लघु मध्यम, मध्यम एवं वृहद परिवारों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा **(आरेख 1.4)**। इस प्रकार लघु परिवारों के प्रतिशत में जहाँ स्थानिक विभेद अधिक रहा, वहीं वृहद परिवारों में स्थानिक विभेद न्यूनतम रहा। उल्लेखनीय है कि दुर्ग नगर में संयुक्त परिवार एवं भिलाई नगर में एकल परिवार के अधिक होने के कारण परिवारों के आकार में भी पर्याप्त अन्तर दृष्टव्य हुआ, जो परिवार के आकार एवं प्रकार के अन्तसम्बन्धों को प्रदर्शित करता है।

जाति संरचना

जाति संरचना व्यक्ति के कार्यिक संरचना के निर्धारण में विशेष महत्व रखता है। मुखर्जी (1961) के अनुसार– भारतीय समाज में स्त्रियों की जाति संरचना उनके व्यावसायिक दशाओं, आचार–विचार, रहन–सहन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति संरचना, जनसंख्या के विविध स्वरूपों एवं सामाजिक–आर्थिक दशाओं के विश्लेषण का प्रभावशाली कारक होता है। इस दृष्टि से दुर्ग–भिलाई संयुक्त नगरों में कुल कार्यशील महिला परिवारों में अन्य जाति वर्ग (67.95%) का प्रतिशत जहाँ सर्वाधिक रहा, वहीं अनुसूचित जाति (4.72%) का प्रतिशत न्यूनतम प्रदर्शित हुआ। दोनों जुड़वा नगरों के नगरीय कार्यशील महिला परिवारों में तेरह गुना जाति विभेद दृष्टव्य हुआ। स्थानिक दृष्टि से भिलाई नगर (8 गुना) की तुलना में दुर्ग नगर (36 गुना) में जाति विभेद अधिक दृष्टव्य हुआ। भिलाई नगर में जहाँ अनुसूचित जाति (6.89%), अनुसूचित जनजाति (9.34%) एवं अन्य पिछड़ा वर्ग (21.27%) का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर में अन्य जाति वर्ग (73.86%) का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ।

उल्लेखनीय है कि भिलाई नगर एक औद्योगिक पुंज के रूप में विकसित नियोजित नगर है, जहाँ द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाएँ अधिक उन्नत है, जिसके कारण भिलाई नगर में सभी सामाजिक–आर्थिक स्तर के व्यक्तियों का प्रवास अधिक हुआ, जबकि दुर्ग नगर एक प्रशासनिक एवं व्यापारिक नगर होने के कारण यहाँ तृतीयक सेवाएँ अधिक विकसित हुई, जिसका लाभ अन्य जाति वर्ग को अधिक प्राप्त हुआ।

वैवाहिक संरचना

महिलाओं की वैवाहिक स्थिति न केवल उनके व्यावसायिक संरचना के निर्धारण में महत्वपूर्ण है, अपितु परिवार की पारिवारिक पृष्ठभूमि के निर्धारण में भी विशेष महत्व रखती है। विवाह एक वैधानिक कारण है। विवाह सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त पुरूष एवं महिला के संबंध के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है, जिसका उद्देश्य घर बसाना और यौन संबंधों को स्थापित करके प्रजनन एवं बच्चों की देख–रेख करना होता है (मजूमदार, 1966)। विवाह की वैधानिकता न्यायालय, धर्म अथवा अन्य माध्यमों द्वारा निश्चित किया जाता है। व्यक्ति की वैवाहिक स्थिति न केवल जनांकिकी विश्लेषण में, अपितु सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण घटक है। सामाजिक समुदायों के विभिन्न क्रियाकलापों में व्यक्ति की वैवाहिक स्थिति का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

दुर्ग–भिलाई संयुक्त नगर में कुल क्रियाशील महिला परिवारों में 51.11 प्रतिशत व्यक्ति विवाहित एवं 38.69 प्रतिशत व्यक्ति अविवाहित हैं, जबकि 10.20 प्रतिशत विधवा/विधुर/परित्यक्ता है। इस प्रकार विवाहित एवं विधवा/विधुर/ परित्यक्ता में जहाँ पाँच गुने का विभेद दृष्टव्य हुआ, वहीं अविवाहित एवं विवाहित में अपेक्षाकृत कम विभेद (एक गुना) प्राप्त हुआ। स्थानिक दृष्टि से दोनों नगरों के वैवाहिक संरचना में समानता दृष्टव्य हुई, तथापि भिलाई नगर में जहाँ विवाहित व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर में अविवाहित एवं विधवा/विधुर/परित्यकता का प्रतिशत अधिक रहा। वर्तमान में सभी सामुदायिक वर्ग में व्यक्तियों की सहभागिता उच्च शैक्षणिक अध्ययन की ओर उन्मुख हुई है, जिसके कारण चयनित कार्यशील महिला परिवारों में भी पुरूषों एवं महिलाओं की वैवाहिक स्थिति में भी वैवाहिक विभेद कम रहा, तथापि विवाहित (55.08%) एवं अविवाहित (39.63%) दोनों वैवाहिक स्थितियों में पुरूषों का प्रतिशत महिलाओं से अधिक रहा। किन्तु विधुर/परित्यकत पुरूष (5.28%) की तुलना में विधवा/परित्यकता महिलाओं (14.42%) का प्रतिशत 2.5 गुना अधिक रहा। तुलनात्मक दृष्टि से विवाहित पुरूषों (55.50%) का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर में दृष्टव्य हुआ, वहीं विवाहित महिलाओं (48.55%) एवं विधवा/परित्यकता महिलाओं (14.56%) का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर में

प्राप्त हुआ। विभिन्न वैवाहिक संरचना में पुरूषों एवं महिलाओं के प्रतिशत में स्थानिक विभेद कम रहा। अस्तु, दोनों नगरों में सह शिक्षा एवं सह रोजगार महिलाओं एवं पुरूषों के वैवाहिक स्थिति के निर्धारण में उत्प्रेरक कारक रहे।

साक्षरता स्तर

स्त्रियों की शैक्षणिक स्थिति से परिवार एवं समाज दोनों की सभ्यता एवं संस्कृति उन्नत एवं समृद्ध होती है, जो किसी भी देश की जनसंख्या के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण सूचक है। शिक्षा न केवल जनसंख्या में परिवर्तन से प्रभावित होती है, अपितु शिक्षा का विकास भी जनसंख्या की गति को प्रभावित करता है (United Nations Secretariate, 1971)। परिवार की शैक्षणिक स्थिति, परिवार के आर्थिक संरचना का निर्धारक घटक होता है, जिससे महिलाओं की क्रियाशीलता प्रभावित होती है। शिक्षित एवं प्रशिक्षित व्यक्ति से क्षेत्र की जनांकिकी संरचना में गुणात्मक परिवर्तन होते हैं, जिससे वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति समृद्धशाली होती है (गोसल, 1956)। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या के बहुमुखी विकास के लिए, जहाँ शिक्षा एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, वहीं जनसंख्या के गुणात्मक विकास में उसका शैक्षणिक स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डेविस (1951) के अनुसार– साक्षरता संक्रमण दर निम्न होने पर आर्थिक विकास दर मंद होती है एवं साक्षरता संक्रमण दर में वृद्धि होने पर आर्थिक विकास दर तीव्र हो जाता है। मिश्रा (1993) के अनुसार– किसी भी समाज का विकास शिक्षा की माँग एवं शिक्षा की गुणवत्ता को विकसित किए बिना संभव नहीं है। नगरीय क्षेत्रों में व्यक्तियों का शैक्षणिक स्तर न केवल उच्च होता है, अपितु रोजगारपरक शैक्षणिक स्तर व्यक्ति के रोजगार चयन करने में विशेष महत्व रखता है। परिणामतः व्यक्ति के कार्यिक संरचना में पर्याप्त विभेदीकरण दृष्टव्य होता है। नगरों का कार्यात्मक स्वरूप व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के उन्नयन में प्रथम मार्ग प्रदर्शक होता है। व्यक्ति की शैक्षणिक स्थिति उनके रोजगार चयन करने में जहाँ उत्प्रेरक कारक होते हैं, वहीं कार्यिक संरचना में विभेदीकरण एवं विशिष्टीकरण के भी प्रेरक कारण होते हैं।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिला परिवारों का साक्षरता स्तर, 2018

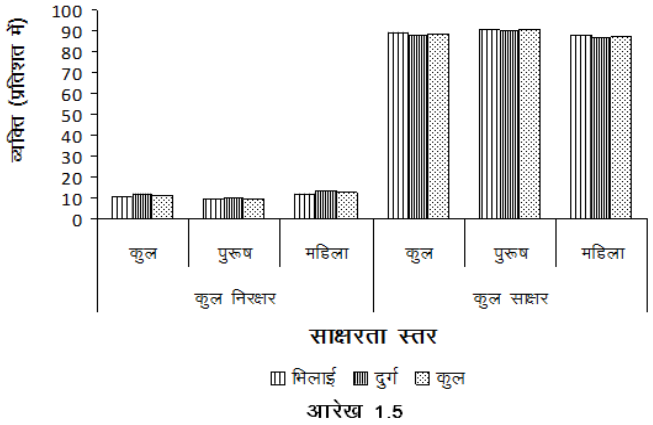

आरेख 1.5

इस दृष्टि से दुर्ग–भिलाई नगरों में कुल चयनित परिवारों के शैक्षणिक स्तर में पर्याप्त विभेद दृष्टव्य हुआ। दोनों जुड़वा नगरों में जहाँ 11.34 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं, वहीं 88.66 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। इस प्रकार निरक्षर एवं साक्षर व्यक्तियों के मध्य आठ गुने का विभेद दृष्टव्य हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर (11.93%) में जहाँ निरक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं भिलाई नगर (89.21%) में साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। निरक्षर व्यक्तियों में जहाँ महिलाओं का प्रतिशत (12. 81%) पुरूषों (9.62%) के प्रतिशत से अधिक रहा, वहीं साक्षर व्यक्तियों में पुरूषों का प्रतिशत (90.38%) महिलाओं से (87.19%) अधिक प्राप्त हुआ **(आरेख 1.5)**। इस प्रकार साक्षर एवं निरक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत में पर्याप्त लिंगभेद दृष्टव्य हुआ।

शैक्षणिक स्थिति

शिक्षा, सामाजिक विकास के निर्धारण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है (कुमार एवं कुमार, 2007)। दोनों जुड़वा नगरों के कुल चयनित कार्यशील महिला परिवारों में कुल साक्षर व्यक्तियों में 28.85 प्रतिशत व्यक्ति जहाँ माध्यमिक स्तर से निम्न साक्षर हैं, वहीं 71. 15 प्रतिशत व्यक्ति उच्चतर माध्यमिक स्तर से अधिक स्तर के साक्षर हैं। माध्यमिक स्तर से निम्न साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत पुरूषों

(26.48%) की तुलना में महिलाओं (30.94%) में अधिक प्राप्त हुआ, जबकि उच्चतर–माध्यमिक स्तर से अधिक साक्षर स्तर में पुरूषों का प्रतिशत (73.52%) महिलाओं (69.06%) से अधिक प्राप्त हुआ, तथापि महिला एवं पुरूष के साक्षरता स्तर में लिंग भेद कम रहा। स्थानिक दृष्टि से दुर्ग नगर (29.90%) में जहाँ माध्यमिक स्तर से निम्न साक्षर व्यक्ति अधिक रहे, वहीं उच्चतर माध्यमिक स्तर से अधिक साक्षर व्यक्तियों का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (72.12%) में प्रदर्शित हुआ। यद्यपि दोनों जुड़वा नगरों में उच्च शैक्षणिक स्तर में व्यक्तियों की सहभागिता अधिक रही, तथापि माध्यमिक स्तर से निम्न साक्षर स्तर में पुरूषों का साक्षरता स्तर दुर्ग नगर (28.79%) में एवं महिलाओं का अधिक साक्षरता स्तर भिलाई नगर (31.00%) में प्राप्त हुआ। इसके विपरीत उच्चतर–माध्यमिक स्तर से अधिक साक्षर व्यक्तियों में पुरूषों का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (75.54%) में एवं महिलाओं का दुर्ग नगर (69.15%) में दृष्टव्य हुआ।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिला परिवारों की जनांकिकी एवं सामाजिक संरचना उनकी जीवन की गुणवत्ता स्तर के निर्धारण की पृष्ठभूमि है। कुल चयनित नगरीय कार्यशील महिला परिवारों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का प्रतिशत अधिक है। भिलाई नगर में पुरूषों का प्रतिशत जहाँ दुर्ग नगर से अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर के चयनित परिवारों में महिलाओं का प्रतिशत 54.61 अपेक्षाकृत अधिक रहा। जुड़वा नगरों के कुल चयनित परिवारों में 0–6 आयु वर्ग का प्रतिशत 6.8 रहा, जबकि वृद्ध आयु वर्ग का प्रतिशत 6.41 प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर में जहाँ 0–6 आयु वर्ग का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं वृद्ध आयु वर्ग का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर में प्रदर्शित हुआ। इसके विपरीत विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों का सर्वाधिक प्रतिशत 15–29 आयु वर्ग (29.68%) में प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से 7–14 आयु वर्ग, 30–44 आयु वर्ग एवं 45–59 आयु वर्ग में जहाँ भिलाई नगर में व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक प्रदर्शित हुआ, वहीं दुर्ग नगर में 15–29 आयु वर्ग में व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ।

दोनों नगरों के चयनित परिवारों में औसत लिंगानुपात 1163 महिला प्रति हजार पुरूष प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर की तुलना में दुर्ग नगर में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अधिक रहा। दोनों जुड़वा नगरों के चयनित परिवारों में कुल निर्भरता अनुपात 27.51 प्रतिशत प्राप्त हुआ। महिलाओं की तुलना में पुरूषों में निर्भरता अनुपात अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। दुर्ग भिलाई संयुक्त नगरों में एकल परिवारों की संख्या, संयुक्त परिवार से अधिक रही। एकल परिवारों का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर में एवं संयुक्त परिवार का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर में प्राप्त हुआ। संयुक्त नगरों में लघु परिवार अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुए। दुर्ग भिलाई संयुक्त नगरों में नगरीय कार्यशील महिला परिवारों में अन्य जाति वर्ग (67.95%) का प्रतिशत जहाँ सर्वाधिक रहा, वहीं अनुसूचित जाति (4.72%) का प्रतिशत न्यूनतम प्रदर्शित हुआ। भिलाई नगर में जहाँ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं दुर्ग नगर में अन्य जाति वर्ग (73.86%) का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। दुर्ग–भिलाई संयुक्त नगर में क्रियाशील महिला परिवारों में 51.11 प्रतिशत व्यक्ति विवाहित एवं 38.69 प्रतिशत व्यक्ति अविवाहित हैं, जबकि 10.20 प्रतिशत विधवा/विधुर/परित्यक्ता वर्ग से हैं। दोनों जुड़वा नगरों में जहाँ 11.34 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर है, वहीं 88.66 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। इस प्रकार निरक्षर एवं साक्षर व्यक्तियों के मध्य आठ गुने का विभेद दृष्टव्य हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से दुर्ग नगर में जहाँ निरक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक रहा, वहीं भिलाई नगर में साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। निरक्षर व्यक्तियों में जहाँ महिलाओं का प्रतिशत (12.81%) पुरूषों (9.62%) के प्रतिशत से अधिक रहा, वहीं साक्षर व्यक्तियों में पुरूषों का प्रतिशत (90.38%) महिलाओं से (87.19%) अधिक प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Clarke, J.I. (1972) : *Population Geography*, Peragman Press, Oxford.
2. Davis, K. (1951) : *The Population of India and Pakistan*, Princetion Univercity Press, New Jersey, p. 150.
3. Franklin, S.H. (1956) : "The Pattern of Sex-Ratio in Newzeeland", *Economic Geography*, Vol. 32, p. 168.
4. Gosal, G. S. (1956) : *A Geographical Analysis of India's Population,* Unpublished Ph.D.thesis , University of Wisconsin, U.S.A.
5. Kapadia, K.M. (1958) : "The Family in Transion", *Sociological Bulletin*, Vol.- 8, No.-2, p. 76-99.
6. Kapadia, K.M. (1966) : *Marriage and Family in India*, Bombay, Oxford University Press.

7. Kumar, R.S. And A. Kumar (2007) : "Regional Dimension of Disparties in Slum Literacy in India", *Reaserch and practies in social science*, Vol. 2, No.2, pp. 98-123.
8. Majumdar, H.T. (1966) : *The Grammer of Sciology*, Asia Pulishing House, New Delhi, p. 582.
9. Matras, J. (1977) : *Introduction to Population: A Sociological Approach*, Newjersey, Prentice Hal, p. 106.
10. Michael, R.C.C (1968) : "The Distribution of Population Age Structures in Kansas City", *Annals Association of American Geographers*, Vol. 58, pp. 155.
11. Mukherjee, R.K. (1961) : *Social Relation and Social Problem in India*, Asia Publication House, Bombay, p.161.
12. Trewartha, G.T. (1953) : "A Case for Population Geography", *Annals of Association of American Geographers*, Vol. 43 pp. 71-91.
13. United Nations Secretariate (1971) : "Major Economic and Social Correlates of Demographic Trends, 1950-1970", *The Population debate: Dimensions and Prespective*, World Population Conference, Bucharet.
14. मिश्रा, डी. के. (1993) : "ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन", *भू विज्ञान पत्रिका,* अंक–VIII, संख्या 1–2, पृ. 45–51.
15. यादव, एच.एल. (2006) : *जनसंख्या भूगोल,* वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर.